

वा०  
६

करा प्रारण नैन त्वित जोजानि ये भूमा  
शपरी की धरत लको उपाय छंद सवा  
सिद गे दुको ल्या वे बी डार क मंग वे सा  
लन ज यो गिनी का कोरी हे उपा वो ति  
सवाल क के सीत धुवा वि जल के क डे  
धर प्र वो वे ध ध न्वतर ये हि भा व्यो  
स पु यो गिनी जा पो पुनः ॥ वो ॥ रा क  
ल रा हि कोरी ल्या वो द हि भा त ता हि मै पा  
को सी श धुवा य म डे र ध रो प्र का श प  
री का भ य म त करो यं वं सा त प ली ने गी  
न के ली जे क डु क तेल क प डे प र की जो  
पुन बाल क को धूणी दी जे जा प र जा यो  
स वि क दि जे पुन यं त र का ज ज म ल ज  
प र म र लिख का ज ज बाल क प्रा गे ध  
रे धू प दे य बी व वं धा य बाल क धा पा  
द र पु रा य प्र प धा य केल क्षा यो  
मु ह मे बाल क प्र के ला सो व मा ता धे  
उ जा पा के त ठा र फेर दे वल मा ता



८	६	३
२	७	११
१५	४	५


अथ योग नीलदा रा छ० नैतन नृद  
 रहवालक नहि नो हुते के सूर्य जे  
 खोल सत मात पिपावत हुज बज बने  
 नरु हैत अंथ लग हली जे मय हरे  
 अते कंदिला वत यो गी नीम कत दत  
 सतारी करी जे पं चरक उपाय कहि  
 अव जो सठ योग नील नक हिले अ  
 ययं चंदे० गंध संग यं ज भ रौवाल  
 कयं चं र गले वं धाय सकल था धा  
 सत पर हरे वालक योग नसाय अथ  
 धाना शी स मे वंधि मे से ध सुख ले  
 वालक जत ही खले पावे य



वा०  
६

करः प्रादुपान नैन खित जोजानु ये भूमा  
शपरी को छत लको उपाय छंद सवा  
सिद गे दुको ल्या वे धी डा एक मंग वे सा  
लन ज यो गिनी का को री ह ड पा वो ति  
सवाल क के सी स धुवा वे जल के क डे  
ध रः प्रा वो वे ध ध न्वतर वे हि भा व्यो  
स प्र योगिनी जा यो पुनः ॥ वो ना तक  
ल रा हि को री ल्या वो द हि मा त ता हि नै पा  
वो सी श ध वा य म डे र ध रो प्रा क श प  
री का भ य म त करो यं वं सा त प ली ने गी  
न के ली जे क दु क तेल क प डे पर की जो  
पुन बाल क को धू रा दी जे जा प र जा यो  
सु वि क रि जे पुन यं त र का ज ज न ली  
प र म र लि ख का ज ज बाल क प्रा गे ध  
रे धू प दे य वी व वं धा य बाल क धा य  
दु र पु रा यः प्र य छ पा के ल क्ष ण यो  
मु ह मे बाल क प्र के ला से व ना मा धे  
उ जा य कि त ठा इ फेर दे ख न ना ता



८	६	३
२	७	११
१०	५	४


अथ योग नीलसुगा छ० नैतन नृद  
 रहवालक नहि नो हुने के सुधी जे  
 बोलै सत मात पिपा बत हुज बज बम  
 नरु हैत अंथ लग हली जेत य हिर  
 अने के दिवा बत यो नी नीम कत दान  
 सुनारी करी जे पं चरक उपाय कहु  
 अव जो सठ योग नी नात क हिले अर  
 थयं न दो० गंध संग यं न रोवाल  
 कयं न करे गले वं धाय सकल व्याध  
 सत पर रह देवाल क योग न साध अथ  
 जानरी सीस मे बंधि मे से य सुख ले  
 बालक जत ही लख ले छ पाविय



वा०  
६

कराग्रास नैन सैन जोजानु वेगुमा  
शपरी नै धात लको ड पाय छंद सवा  
तेर गे हुको ल्यावे बी डार क नंगा वेसा  
लनज वोगिनी का बोरी हु ड पावो ति  
सवाल क के सीध धुवावे जल क के ड

**धर श्रवो वै धध तत र वेहिना छो**

स पु योगिनी जाये पुनः ॥ बोगात क  
सालि बोरी ल्यावे दहि भा तता हि नै पा  
बो सीध धवायन ड रध रो रा क शप  
री क भय सत करे ये नै सात पली नै गी  
न के ली जो क दु क तेल क प ड पर की जो  
पुन बाल क के धूणी दिजे जा पर जाये  
सालि क दिजे पुन ये त र का ज ज न ली  
पर म रे लिख का ज न बाल क भ्रागे ध  
रे धूप देय बी व वं धाय बाल क धा पा  
दूर पुराय प्रय छ पा के ल क्षण यो  
मुह न बाल क भ्र के ला से व ना म धरे  
जि जा पा कि त ठा ड फेर दे व न ना ता



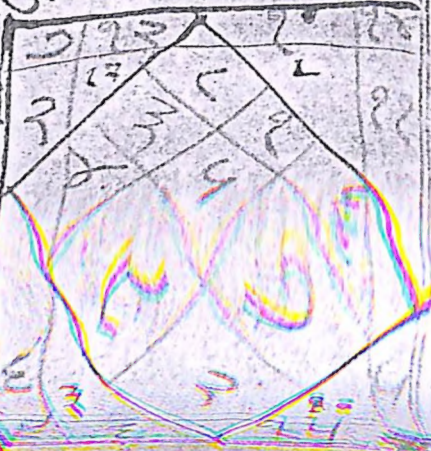
८	७	३
२	७	११
१०	४	२


अथ योग नीलदा रा छ० नैतन नृद  
 रहवालक नहि नाहते के सखी जि  
 खिल सत मानिया बत हुज बगवत  
 नरु हैत अंथ लग हली जेन य हेर  
 अतै कदि लावत यो गी नीम कत दान  
 लजारी करी जे पंचगक उपाय कहि  
 अव जो सठ योग नीलकहिजे अ  
 ययं नृदे० गंध संग यं नृदे० रोवाल  
 कयं नृदे० गले वंधाय सकल बाध  
 लज पर हरे वालक योग नसाय अथ  
 धानरी शीस मे बंधि मे सख सुख ल  
 वालक जत ही लख लोख पातो य



प्राइ जागत वालक धिल चित्ता  
 ई ॥ ॥ माता दूधी देत द वाल  
 क मन ही लेय ॥ का प्राप रि जो  
 ग्ट सहै नु रत उलटी कर देह  
 ॥ उपाय दो कच्चा कुंडा शन के  
 का जल सिम सो लेष गुडिया ला  
 त बनाय के ले चौरा हे देय ॥ पुनः  
 यंत्र ॥ पत्र लिख दे ग्राठ का वा  
 लक के गल पाय सख होवे वा  
 लक को घाया दूर पराय ॥ पुनः  
 पुनः चोती सभ पंद्रस ध  
 र भोज गंध सा लिख धरे ध  
 प देय वालक गल पायः का  
 या दूर परे हो जाय ॥ तिस को

उपाय यंत्र





मधुगत जो सेवन भाय लेखे यं न वो  
धे गलनहि जाय देव के र आवे नाहि  
उक्त भेड तले की मटिल्या बू तिसना  
टीका पून लावना वे सप्रसू दे तिसमे  
लाय भोजे मधुगत हो रचना ये करहु  
यकपडा जो लीजे ताके चार रंग के  
रीजे काल पीला लाल मसुरे ल द चार  
पुडी का राखो भेद दो दाख जवी वि  
लिजिये जाय फल लौंग तिलाय महु  
दीव दन शत के औ र धूवी र मंगा  
य चौ सात पुडी इसकी करे धरे य  
इत्वारु कजे करे कोर हुं डीश क मंगा  
य सकल सप्त ग्रीता मे वाय दो काल  
कशी लघु वाय के जल का ठे र खवाय

का रत वाग ना की जिये पागे रात ता  
हृदय भोजे वाग पी के लक्ष्मी



प्राई जागत बालक विलचिता  
 ई ॥ ६ ॥ माता दूधी देत द बाल  
 क मन हो ले य ॥ का प्राप रि जो  
 ग स है तु रत उलटी कर दे द  
 ॥ उपाय दो क चा कुंडा ग्रान के  
 का जल सि स सो ले स गुडिया सा  
 न बनाय के ले चौरा हे दे य ॥ पुनः  
 यंत्र ॥ यंत्र लिख दे ॥ शठ का वा  
 लक के गल पाय स स दे वे वा  
 लक को घाया दूर प रा य ॥ ॥ ॥  
 पुनः चोती सुभे पंदरा ध ॥ ॥ ॥  
 र भोज गंध सो लिख धरे ध  
 प दे य बालक गल पायः ॥ ॥  
 या दूर प रे हो जा य ॥ तिस को

उपाय यंत्र

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४



मछुगते गीते च न म वि वि रं च त

धे गल नाहि जाय देव के र आवे क हि  
उत्त भेड त ले की म दि ल्या वें तिस ता  
टी का पू ल ला व न वे स म स द दे तिस मे  
लाय ॥ गे यु ग ल हे र व ता ये ब र ह  
च क प ड जे जी जे त के चार रं ज क  
रि जे का ल पि ला त्या म स वे त द चार  
पु डी का रा खो म द दो दा ख ज वी वि  
लि जिये जाय क ल लौ ग ति ला य म ह  
दी व द न श न के ओ र भू वी र म ग  
य चो ॥ सा त पु डी इ न की क र ध रे य  
इ त्वा ए क जे क रे को र हं डी ए क मं ग  
य स क ल स म ग्री त नै वा य दो ॥ बाल  
क शी ल पु वा य के ज ल का ठे र ख वा य  
क र त व ॥ प प ना की जिये ॥ गे रा म त  
हू य ॥ प्र य ॥ गे का श प दी क ल द ॥ रा  
दो ॥ ज को इ य म ॥ गे का श की क प त



अथ नासी उमेद बाली ना मुरद जल दा  
 न ज र मा जयो दृष्टि म सा गु ल ल गु  
 दो॥ ना सी जो उमेद मे मुरदा दे वे ना  
 न बाल क धया ज नि ये स न ल क्ष गु म  
 रु ये न ह्य प म स के रहे मय बो ज  
 हे ज या छ बा दृष्ट म सा गु के हे र  
 रोग कु ध ना ह ता प न हि जो र ज्व र न  
 हि दिन स क त दे ह म सा गु दृष्ट जो  
 ज गो ये ता के ल क्ष गु ए ह ता को  
 उ पा य र वि गु ल र दृष्ट म गा वे चो  
 र गो लि ता हि व ना वे र नि र ति गो  
 ली व ना वे गो ली प र मं त्र प डा वे रु क  
 बाल क रु क म ता वा य सा त दि व स ल ग  
 दि यो दृष्ट म सा गु मू त प र ह र ल क  
 म सा गु दे हि ते ट रे ति स का उ पा य मं त्र  
 ओं न मो दे वी क ह य ले पू र्व प म्म म को  
 च ले प म्म म वा स ग च ले मं ज नी पू म

वतय



उवाय चारुय कय ड जोली जे तबो  
चर रंग करी जे कल पीला स्याम स  
पैर सात पुडी काश बो भेद सात सय  
साहिदा खज बीजी जय फल लौ गती न  
धरी जे सहदी के शर प्रेर मंवी र  
सात पुडी राखो पूर सात न ज बापू  
त लाकरो सकल सम गी हुं डी ध  
रो ले बालक के तीरा बुवाय ठक  
ए दे मुख खान कराव स्याह म  
दा र का प डे ले हुं डी चुरा हे गा डे के  
फेर खान कराय के चार मे खप ठलाय  
वैद्य धनं तर ये कहि देहु म सा ए कि  
लाय सात ग्राह के प्रंतर तिय के का  
लं हिय बहु ते गुणी जन पच म रे  
रं जन पके कोय होय न रंज बह



वा०  
४

डामसाण दुजभुगतलनमाह जन्मल  
हिवालक मरजय तरतरंगकोकनेडि  
जाय पन्वतरकहेसिद्धहुजय इति  
अथगर्भप्रवेतिसकोइपायापे नंअ  
वमेकरुवनायघरयोसठबालेह  
गताय नम युगतीकरवलकवधावक  
देकडाहिगर भयभाय तिसका म ज  
लिखतेह अथयज

१	८	१	८	१	८	१	८	मंज
२	१	२	१	२	१	२	१	यंज
३	११	३	११	३	११	३	११	नाज
४	१२	४	१२	४	१२	४	१२	नाज
५	१३	५	१३	५	१३	५	१३	रक्ष
६	१४	६	१४	६	१४	६	१४	रक्ष
७	१५	७	१५	७	१५	७	१५	जोड
८	१६	८	१६	८	१६	८	१६	सुह



का०  
५

हनुमतवीरदेवो जेसं गती जरा लंघ  
 लनालातपर्वत जितनी धवाइ वा प्र  
 येतरसो दोष पवाइ जा जो कुर दोष  
 हिय सो पार पचाइ या सो बैंग मै मै न  
 विधिक दुग्गी व डे मं न रु ड का र पाइ  
 फुरो मं जोई प्ररो वाचा उन दो पं  
 लिखे जो वतरां प्रष्ट गंध संयोग त्रिय  
 काल कंगल बांधि सल जाय निदो ग

१८	२१	२४	२७	प्रष्ट गंधिया गता
२३	१२	१७	२२	गल धरा पुष्य
१३	२६	१६	१५	जो ज्वर की प्रभा
२०	१५	१४	२५	हिय प्रवेजी व

उरा सो यतन प्र चल सुख प्रवेका  
 गता को नु गिया लो लग ने न जो जा  
 के दुखत रहे रोग प्र पार धन्य तन  
 कहै तिलका उपाय यो प्रष्ट गंध जो  
 ले न जाय कर कंदर के जो तास मय  
 यति ससाय फेर यै न लिखा य न



अधिः सभ चिजा विचधरले ॥  
लडु रोहि सत खिल खवेपा  
सेधरे वालक के छुवायके ।  
पूर्वमेव लिदे नि इति नंद निपु  
तना ५ ॥ प्रथम षष्ठ वर्षे वलि ॥  
कौमुदि पूतना रोग ॥ प्रतिज्वर ॥  
॥ शकाशको देखे वार २ रोवे ने  
त्रनिचे भोजन पावे नहि सरीर  
की खबर नहि रहै सत भात ले  
विपा ॥ विचडि दुध मिलाय पुदि  
पा ॥ ले होडि विचपाय ॥ उपर फ  
५ लपसि ॥ दिपक चार ४ दलिरा  
मेदे दिन १ इति षष्ठ वर्ष ॥ ॥ प्रथ  
स प्रथम वर्ष वलि रोग घांसि  
स रोवे दूध उलटे ॥ प्रन्न खवे  
वली तंडुल पीले ॥ सु रगिका ॥ प्र  
कने रके फल ॥ प्रात काल दे  
चगव स्नान इति सप्रव



कुंभकरिका पुतना रोगः श्वेत-  
 ज्वरः पेटप्रफुरा श्वासि स्वास  
 चावलवनावने धिचट्टि को  
 रिसनक मेरखे घृतकादीवा  
 इति ॥ अथ दशमा मासः ताम-  
 सिनामः रोगः ॥ नेत्रातेदिखेन  
 हि माताकादूधपिवेन हि उप-  
 रन् स्वासः श्वेतः वलि लालतं  
 डल मधिमांस दीवे १ चूनके  
 वालने कुजि १ गुडुग्धपाय-  
 पूर्वमेवलिदेति ॥ इति ॥ अथ  
 कादशमासः ॥ राक्षोनामः रोगः  
 स्वासः कंवेदरोगः सरीरधिनर  
 मेघटे कविश्वासरुके वलि  
 प्रातकालमेदे मध्र मास चाव-  
 लविचधरगे दोषकतेलका  
 नमो टिल ॥ इति ॥ अथ द्वाद-



रको. रोवे. काया नदि जाय. त  
प. स्वास. घांति. नेत्रमिच. बलि  
उडट. भत्त. लोविपा. साग सोपे  
चंदन. धूप. तिलाका तेल का  
वा. मिट्टिके पात्र मे धर के दक्षि  
मेवलि देय. इति ॥ प्रथम प्रष्ट  
स. ॥ कर जाना मपुतना. रोग.  
डे. रोवे. खजावे. सर्वपत्रे सि  
नसिया. स्वास. वदुत कं पे. स्व  
जात. मुख मुके. वेअध होवे. व  
ली. सतना जे को पी सलेना हल  
तेल मला के बटना वाल कके  
लेना फेर उता रके मैल का प  
मलावना मना सधूर जडा व  
लोग. प्रगाडिर खणे. जरद व  
मे. वाल के के शिर चवार  
वराबर वखले कवर वि



अथ अष्टमवर्षं नंदनिपूतना  
 रोगः सिचलदेहः पेटप्रकारः प्र  
 लवलि रिवचडि साग लोविया  
 मधि रिवला दीपक ४ हाडि विचध  
 रे दक्षिणमे रात्रि ३ देवे इति ३४  
 अथ नवमवर्षं हंसनिपूतना  
 सरीरशुके छांसि निद्रावौहत  
 अनिसार बालि तंडला लपु  
 व्यपीले मूरगि अंडो १ लडपले  
 गलायचि पूडे ५ उपर दंधपा  
 य दिपक धूप पूर्वदिक् मेदेन  
 इति नव ॥ अथ दशवर्षवलि रोद  
 गोपूतना रोग नीलवर्णदेहको रुच  
 को गतशुके बाले चावल लोविया  
 रिवचडि ॥ रिवला दक्षिणमेदेवे दी  
 ॥ कसमेदेनि इति ॥ अथ एकादश  
 वर्ष बालनीमगमपूतना रोगः नृ  
 कहरालि बालि कोरापात्रमे  
 ॥ १२ ॥ नायचिपाय ॥



सबलिः भद्रं नाम पुतना  
सूक्त सारा सरीरं जंवाई०  
प्यासः बालिः ध्वजा १ तंडले  
पुष्पः दीपः दक्षिणादि प्राप्ते  
बालिदेनिः इतिः प्रथमं चमः  
मासः कुरकटिनाम ॥ राजः  
सजाद्यकं वै दूधनापिया  
जायः वेअधः वारवार रोवे०  
बालिः उडदकाले लपसि०  
प्रहारात्रमेवलिदेतिः इतिः  
प्रथमं सखैवलिः बहु  
तप्यासः रोवेः अलः बली  
वावलः यवः सुरगा १ कुलधिः  
मद्यः मिटिके पात्रमेधरके  
चराग तिलाके तेलकामध्या  
इमेवलिदेनिः इति षष्ठं०  
इत्युक्तं सखैवलिः ॥  
गताः राजः नाना



॥ ३० ॥ (२५)

कंपे. चुंधे नहि. रुदन करे. वे  
सुध. स्नान कि. प्रोषाधि. खरह  
टि. गुगल. पीलिसरसो. येह छ  
तनेपका के उस घृत की माल  
स कर नि. उपर से पंच गव्य से  
स्नान करना रक्त वस्त्र तो सरी  
र पोचना फेर नै वेध की वलि  
दे निधूप. दीप. विचधरावे.  
इति वृष्टरात्रि. प्रथम सपुरा  
त्रि. मुक्त के शिपुतना. शतग्रसे.  
रोग ॥ जंबाई. पूतिसार. प  
मन. वलि धूप. दीप. नैवेद्य.  
दाक्षिण दिशा वाली दे जाय. व्या  
घन खधूप इति सपुरात्रवलि  
प्रथम वृष्टरात्रि. टंडुतिनानपु  
तना. रोग. स्वासन. शवेरु के  
रात दिन रोवे. कंवे. ४ ज्वर ०  
जिह्वा लाल. व्याघ्रन खधूप दे  
ने. २ ति वृष्टरात्रि.



वरात्रि ॥ प्रजामेखिपुतनारोगको  
 ० रोवे ० स्त्रीस ० मुक्कियोकोवहे ० मि  
 टिकेपात्रने दुग्ध गुडमलायके  
 दक्षिणदिकने रखन मध्याह्न  
 मे फेरदान ॥ प्रष्टाष्टक रावण  
 श्रितिवरात्रिः ॥ प्रष्टाष्टा रात्रि ०  
 रोदननामपुतजा ज्वर ० मवाइले  
 वेनौहृत ० रोवे ० बाली ० चो बनेनाके  
 पुष्पा ० धूप ० दीप ० दक्षिणदिकने  
 देना ॥ इतिष्टा रात्रि ॥ प्रष्टाष्टा दश  
 इयमेवे ॥ प्रष्टाष्टा दशमासवलि  
 ॥ मासजात बालकतवहिव स  
 कुनानामपुतनाजोय ० गुग्गुलु  
 जात बालकतवहि ॥ भूषणस  
 लागतजवहि ॥ रोग रातदितरोवे  
 लालसूते ० नेत्रमिचे ० नाप ० वे  
 दिलहोकोबुधे ० पुण्यानाजावे  
 तनकिप्रधना रहे वलि ०  
 मद्य ० सतपताका



(२३)

मध्याह्ने वलिवैवे इति प्र  
चममास० प्रयद्विजियमास  
श्वेतगात होवे दूधपियाना  
जाय० सरीरसकता जाय० रो  
के कंठकफवाय वालि० चावल  
दुग्ध० मध्यमे गुड॥ चमखा  
चराग० निवपत्रको धूप० दूकि  
णदिकमे वलिदेनि० सप्तरात्रि  
इति द्विजियमास० प्रयत्ततीय  
मास० ज्वरजादे० नेत्रमीचे सोवे  
रोवे० सरीरको तोड॥ स्तनना  
लेवे० कंठा होवे धूप शिव  
निर्मात्य० सरसो० माजोररो  
म० घृत० वालि० ध्वजा० पुष्प  
लालकनेरके० सहित० दूध  
दि० घृत० मिष्टान्न० वलिदिदि  
येदक्षिणामे संध्यासमे  
नउ इति॥ प्रयज्ज



सभकोई दोतीन भ्राण जो हो  
६ र होइ से जोग निब मोह पीतो  
चाहो र हउ फुटिया मृगिया दि  
पावताय० ताके श्रवत दुरा सुनो  
तो नो श्रं क सुनाय ॥ नृगो से उत  
पतह कच्चा मसाण सुभाय लह  
रा ॥ कान नर म हो र कल म लो  
सीत हाय हो र पाव बालक को  
यह रोग होता मशाण परभा  
व मृगिया ल दुरा ॥ दोह ॥  
हृष्याव फुटत र ह कार सुरह  
ताही होत श्रंखमी चबोले न  
हि नृगिया कहिये सोय उपाय  
॥ चौपाई ॥ चौथे दिन नासत म हो  
न ता पाती कछ मले हो ॥ ना ना पा  
नी छिछ मले हि ज वायणा देहि  
ना की कही ना न सुने हि दोह ॥  
शधीति र चर लाय के नास वा  
ल क को देय बिना जाने दे न हि



वा. ७  
प्रथम उत्तम ठीक रोपा प्रतिम.  
शाण लुत्तरा ॥ ताको बालक  
तुरत मरेह जिह्वा लाल फुगग  
नो देह उद्भवास होरत जे ग्रह  
र जानो खगरो जजि रधार पु  
नः धृष्ट परेह दोर गात कुच्छ  
सम जाणहि लालि सगरे ग्रं  
पे पर नावेही प्रति सारत नया  
य चित विच्छा दुवे ता को जाण  
धन्वंतर यु कहि मंत्र जाय साण  
गुरु नाथ हटावा बालको धोर  
मत प्रावे ॥ दोहरा ॥ पीपल की  
सेवा करो होर पितरा को मानो  
धडिया भर के दिजिये होतरो  
ग की हान मृ त्युं जय के जय क  
री वी सहजार प्रमाण पाछे  
जपे जो मंत्र को होत रोग की।  
छार ॥ प्रथम गर्भ धन ताजा ॥



जो जाणे सो देय उल्लवारी सो  
दिजिये सल्ल रोग मिट जा पुनः  
लक्षण श्रुत परोका कंपे सीर से  
र पां व नेत्र हो भ्रूत हि ॥ शकास  
परि गट स जाय ॥ जो जाणे नेत ही  
॥ तिस का करो उपाय तरत संक  
ट मिटे करो विधि संपुक्त रोग  
सारे करे ॥ उपाय ॥ चैपाई स  
बासे रोग दुस्त मलेह तामबीडा  
पान धरेह सात पता से तमध  
रो श्रकास परिका भय मत क  
रो हांडि विच धरो धर माह सा  
त नांत की योगिनि जाय श्रं क  
स राविको शिलेह दहिनातम  
ध्य धरेह कपाल श्रुवाय मंडरे  
राखो सात पलीते दिन मे भखो  
कोरे दी वे दी सो वालो कट को  
ल दी वे मे डाहो जाय मे सो  
श्रवेन हि यंत्र गले मे बाध सहो



मंत्रपढ़ै पुजा करै हो र दिवावे  
 दन मुत्तुं जय के जप करे ज  
 न होवे कल्याण प्रथ प्रचलि  
 याम प्राण लक्षण ना सा जो  
 न को र ह गु द ग डा हो जाय न  
 नन जो को मल जानिये ताम शरण  
 तम शो य उपाय वं वी जो माटी  
 शन के वय वा वी ज जो लेय गुड  
 जो पुराण मेल के ताल के उपर शन  
 द्य पात प्राक के मय कर चौप डि  
 उ धी व र स न का ही का ड के ता छ  
 जा कर क पी व चौ पा ड पातो को म  
 ल पानि ले ई वाल को सन संध मे  
 ले हि त वे सो को जो ल ल्या व र च क  
 प्र क कि ना सा दे व य प्र थ प्र का  
 प्रा यो ग नि ग्र स्त लक्षण चौ पा ड  
 यो गि नि ज व बल क री शय ॥ मुख  
 श्र व ल पी व त क धु ना य स वा म ल  
 ग बली हो ई का उपाय की जे ॥



बा.  
१५

श्रावण डे कविलाल हो कवि  
न हो जाय दरद डे मृति पेटने  
कर शौषड मिद जाय उपाय फु  
सम धाय मागु सहित दोर मोच  
र सपाय माई जब श्रान के सु  
वत रे रग डाय बेल गिरु को ग  
र के पोस्त डो डे संग कुट धारा  
चुरण करो घाता जे जल संग  
रोग भिटे सब बाल को दोती न  
हो जो खान दोर नि नित दी जी  
ये होत रोग की हान ॥ चेतन मशा  
रा गट सल तरण भुख होवे वा  
ले के को श्रुत न हि मन भाष ॥  
हरिवस्त देखे वहुत ॥ गुनि ज  
न दियो बताय उपाय फुक स  
पारि सिप को दोर को डिको घा  
र बाल कू जाय चंदा बहि दे  
त हरो गुनि बार स्या भवरन  
ल के छला पशत द दोरे जात



पा.  
१४

तवग्रस्तचतुर्दिशसोय उपाय  
नृत्तुं जयके जपकरो होरक  
रो कछु दान जाडा दीजे मंत्र.  
सो होत रोग की हान प्रजास  
रत्न दण ॥ प्रति सो बेरो वे अ  
धिक भू सरजा ह्येय उपासर  
त जात गु द ते क ह्यो ना जीव  
न की ग्रास ॥ उपाय ॥ सातना  
ज का पूत ला करै उडुद कौता रोरी  
उचलै ना जान वारि सात छुवा  
यके सुरत मंत्र जो जाप रोग  
घटे सनवाल को सुरत निटे  
तन जाप प्रथमै सा सरगुट सा  
ल दण ॥ भै सै सनतीन सन  
वदन होत ना हा नदार हो  
न खाज वहुत न बिषे ये प्र.  
ति रोग बि सा द उपाय लेर  
सौत चंदन सहित वंश लोच

की



वसुका मशाण बंधु खेमच कुरु कामशा  
ण बंधु उल्हे देहली कामशाण बंधु अथ  
लियामशाण बंधु पु लियामशाण बंधु पि  
नियामशाण बंधु हडपुटियामशाण बंधु  
मगियामशाण बंधु विगगियामशाण बंधु  
वपदियामशाण बंधु कौटियामशाण बंधु  
गुडलियामशाण बंधु ठिकदियामशाण बंधु  
हेलिटियाली कामशाण बंधु गरुमम सिवा  
मशाण बंधु फलकियामशाण बंधु मव  
शबौदश कामशाण बंधु जलचलकी बोमोने  
बंधु फालकामशाण बंधु फालका नाग  
बंधु खबीर बंधु पदिवंधु जुडैल बंधु आ  
बुण जाबुण बंधु हडहड बंधु रोम रोम  
बंधु कलबल बंधु ईमरमर देव की दुहा  
ईमरमर पिंडकावा फुरेमंत्र ईमरमर वा  
पहले मंत्रक जपकर ले २२००० फेरका  
डादे सब मशाण जाय अथ वशो दिशा के  
मशाण जलण लेह अति हलते वें अथि  
क कवि मधु हो जाय कवि उठे तन मज



नापाय. जाडा दे के मंत्र को फे  
र दे र पिलाय. प्रथम चल काम  
साण लक्षण ॥ बौद्ध तत्त्व भाग  
ल को लगे होत छि म कन बाल  
स्वेत वर्ण हो देह का बाल. वा  
प के दे. प्रसन्नान कर य मंत्र स  
हित पुजा करे सर्व रोग मिट जाय  
श्रेष्ठ ॥ गोर घुंड़ि शान के सात  
देव्या व रोग मिटे सुख बाल हो  
सुंदर ये हि उपाय. प्रथम योग नि  
लक्षण ॥ मंजुषा र सोवेन हि पेर  
धरन ना देय रोव देन आकाश  
को जिस दिन ता प शाय ॥ उपाय  
सह दे विरस शान के. प्रथम निर  
चले पाय त रत पिला व बाल को  
सम संसे मिट जाय. प्रथम बुध का  
मण्डल लक्षण. शठ पहर तय  
नन विषे कवि उत्तर चंड जाय ॥  
प्रति सा र होत न विषे की जे उपाय



बावलधिधरवायः एकचूनका  
दिवाकरै चमुखावाल तहालोधरै  
० दोहा ० गुडनालियर इस्त्रीकोछु  
हायकै तिनवारशीसछुवाय ए  
कगोहासलगता नाकेनटिकना  
रेजाय नालियरजिमिमगाडिये  
० उपरचीजरखाय ० प्रहृष्टात्रिके  
बीचमै दिजेवालिदिवाय ॥ ० प्रघ  
गहणमसाणीका जिसकोलडि।  
लागीहोयः दोहा ॥ दूधगेरेहो  
रहरेपीलेदेय विधिः ॥ एकहांडि  
लेयमंगाय सवासेर राखपंजावेका  
लाय सातकोकरा चुराहेकिकहि ॥  
सातमूल किछरकेसहि सातपूल  
कंडाईकेलावै सातकोडिया कारी  
पावे महादिपात शीशकाप्रांदादीजे  
गलकीचोली कालीकोजे ० दोहा ०  
बालकशीशछुवायके दीजेचौ



गज कपडा दे दान ताके  
प्रागे करु विधान यहिका  
मप्रात को कीजे संध्या समे  
फेर गहरण दीजे कसंभि  
कपडा लेय मंगाये ताकी  
छिगुडिया धिकोय लेल्या  
य उनगुडिया के प्रागे धरै  
बाय एकगुडा छुंगट वाला  
करै उसिगुडे के प्रागे धरै  
भोग सरवत का छिहसि  
ल्यावे भर कुजिया बिचध  
रावे एकतमा सुपात धरावे  
चावल धिबूरा पावे गोब  
र काटिवा बनावे ताहि बाल  
के बिचध रावे चावल हो  
र तिस नारिलेय छुकाय ॥  
एक उपला सुलगती ल्याव  
तिस गहंणे के साथ ले जाय  
नदिक नारे देय धराय ॥ प्रथ



का.

१२

जिसखीकेवलकसकजाय  
तिसकाउपाय ॥ एककुना  
ले कोरित्यावे ताहविच.  
समगिधरावे एकखद्यो.  
लिलेहमंगाय ताकोपरां.  
देसेबरावाय एकगुडा  
गुलाविकरो उसिघटोले  
उपरधरो खटगुडियाति  
सकेप्रागेधरे तिनकोटी  
जोकाजलपाय पुडियायो  
हसल्योवे उनगुडियाके  
प्रागेधरावे तिस.  
गुडेकेप्रागे यः मसकसिं  
धर गुडेकेलावे ताहोएक  
नालियरधराव तिनोकुजि  
यालेतमंगायः काजिहूसि  
सरवतभांग धरायत  
मारुकीचिलमधरायः बूरा



श्री.

१३

रेजाय संध्यासमेकीजीये वा  
लकरो गतसाय प्रयजाति  
कीमशाणि मन्त्राणां लगादु  
वाहोय निसका उपाय ॥ मंत्रे  
लिरव्यते ॥ ओं नमो ॥ शदेशागु  
राको ॥ शदेशा हरिया परवत  
सेहन मन्ता ॥ प्रायाहस्तगा जं  
ना ॥ प्राया उलट पलटता ॥ प्रा  
या परपवत पेदा उघडंता ॥ प्रा  
या लोहेका कोट बगुका किका  
ड चारो छुट मोबंध जाय जी  
समेवेढे हनुमंत वीर पूर्वका  
देवबंध पुष्पमका देवबंध  
दक्षणाका देवबंध उत्तरका  
देवबंध चारो दिशा काम  
प्राणबंध ॥ प्रजापतिबंध ॥ मे  
सापतिबंध जल काम प्राणबंध  
धु चल काम प्राणबंध रुक्



चावलधिधरवायः एकचूनका  
दिवाकरै चमुखावाल तहालोधरै०  
० दोहा० गुडनालियर इस्त्रीकोधु  
हायकै तिनवारशीसधुवाय ए  
कगोहासलगतता नाकेनटिकना  
रेजाय नालियरजिमिनेगाडिपे  
० उपरचीजरखाय ० प्रहृशत्रिके  
बीचमै दिजेवालिदिवाय ॥ ० प्रघ  
गहणमसाणीका जिसकोलडि।  
लागिहोयः दोहा॥ दूधगेरेहो  
रहरेपीलेदेय विधिः। एकहाडि  
लेयमंगाय सवासेर राखपंजाबेका  
लाय सातकोकरा चुराहेकिकहि॥  
सातभूलकिचरकेसहि सातफूल  
कंडाईकेलाबै सातकोडिया कारी  
पावे भहदिपात शीशकाप्रांदरीजै०  
गलकीचोली कालीकीजे० दोहा०  
वालकशीशधुवायके दीजेचौ०



गज कपडा दे दान ताके  
प्रागे कहु विधान यहिका  
मप्रातको कीजे संध्या समै  
फेर गहरण दोजे कसुंभि  
कपडा लेय मंगाये ताको  
छिगुडिया छिकोय लेल्या  
य उनगुडिया के प्रागे धरै  
बाय एकगुडा घुंगटवाला  
करै उसिगुडे के प्रागे धरै  
भोग सरवत काछि हसि  
ल्यावे भर कुजिया बिचध  
रावे एकतमा सुपात धरावे  
चावल धिबू रापावे गोब  
र काटिवाव नावे ताहिवाल  
के बिचध रावे चावल हो  
र तिस नारिलेय कुवाय ॥  
एक उपला सुलगती ल्याव  
तिस गहणे के साथ ले जाय  
नदिक नारे देय धराय ॥ पूछ



का नाला काचे पिंडका माहादे  
वरखवाला उस पिंडका तरख  
वाला सब दसाचा पिंडकाचा चलो  
मंत्र उखरोवाचा ॥ इस मंत्र सोस  
बनसांगी जाय ० डोरक ताय  
२१ नारिकुमर बांधेतो गर्भ  
मे पुनः दो ० हुल हुल पाते श्रा  
म के तामे जवायन पाय छूटिदि  
जे रगडुके रोग मारा गोजाय ॥  
अथ कंवेडे का उपाय होयिअं  
डो श्राव के तामे जवायन पाय  
रगडु जो दिजे बालक को रोग  
कंवेडा जाय अथ कंवेडा लेप ०  
गंगा जल गोदुग्ध मगावे जो  
मुत्र तिल दान मिलावे उस हे  
जल मे देहन होय यहिसम  
ग्रिद ईवताय ० पुनः लसन ज  
वायन पीसके जल सोपाय  
न होय ० होय कृपा भगवानकी



समस्त यके कहे धनवंत रस्यल नि  
 सका उवाय मह दी जडन ना रस वति  
 सगल क को दे प रला वडि मंगाय के वा  
 ल कल चन दे य प्रय बाल क प्रति सार  
 को उपाय का क डालि जि हल दी दे दे  
 द्र जौ प्रति सार जवा यण हि लो लो र  
 ठा ल ठ पा व ल जौ भे द लो जी रा कु ड  
 मिलाय मिला रौ ल ने पा द्ये जल दी  
 बाक प्रति सार बाल क हरे पुन दे  
 बिल्व क थ धा बालो दे ले गल गल  
 पियल जौ पिलाय मधु संग बाल क  
 को दे प्रति सार मिट व प्रय बाल क ड  
 बे का उपाय चौं केश र जौ रोच न ले  
 पाव ले दधी का दध मिलाव दे त वी ल क  
 को ड था जौ य पुन चौं जड त फल का  
 ना भाने लाम गा ठ का को ना ठ ने का  
 ने लो वा जा ड क रे ड था रोग बाल क  
 का हरे जिस जिस का ना व ध ना जाय

के



जरोता को रोग कथय प्रथम डा ल  
 हा जाय के पे ट मे उप जि ये व द्या व द्ये  
 के पे ट मे उप जि या का द्या का द्ये के पे  
 ट मे उप जि या का ल जा का ल जा द्य  
 टे ल प व द्ये मे रि म क्त गुरु की ल क्त  
 कु रो म न ई स्त्र रो वा चा प्रथम ल क्त  
 के ड र्थ का य न दो र वि वा र म ज न  
 र म व र य त र लि त्वा बना य वा  
 ल जी वा ना ध ये ड द्य रोग न शाय

३३	३३१	३७	प्रथम जिन को जसा
३३	८८	३७	एतथा जिन को ज
३७	४३	८७	इति रहता है जिन

को उमा क जे न प्रो  
 ह न मान ह वी ला लो ह को ला ठ व ज  
 को को ला उ ड द वे दे प ठ ता का या  
 हो क मा रह न मान ज गा का जा ज  
 जा ग रे प्रो स र जा ज न ह दे व कि  
 प्रा हा ना य व द्या के कु जे शी व



धा.  
११

रोगकंवेडा जाय

१	५	७
११	१५	२
२५	१०	१५
६	१२	८

अथ जिस स्त्री को

बालकना जीवे

तिसका उपाय

एक को राधडा मंगावे स्नान  
कर ताको भरवाव फेर एक  
ब्राह्मण को बलाव ताते पिछे  
होर विध करे पुनः खडि होवे  
जव चाहे नारि उज्जल होय के  
करे तयारि र विसुत दिन पि  
पल पै जाय ताकि कृपा कह सम  
जाय एक छोटिया कुजिया मंगा  
वे भर भर घडे सो पि पल संजा  
वे भर कुजिया गेरे सौ बार ॥  
को तर सौ बी उस मे डार यह ए  
क मास कर कै घर आवे कर पू  
जे जो ब्राह्मण को जमावे ताको बला  
उज्जल भोजन जनावे सवाचार



कैशनेगोकैधीकेसंजम्वोपडेकेज  
जमनवेपरठानेजवहिगरतपज  
होजवेतकनीरककवेवैनववि  
सेकोमदनकीजेकिंचितनूसदिका  
वैसक्तसंदिमदनकीजेघाडीदू  
रहोजावेधन्वंतरगोसाभावेसक्त  
उपायकरावेउक्तचोदिनाधारुतु  
ननासदेहितप्रतीरकोकंठमलोहि  
मितप्रजवायणकरेउपायकहे  
धन्वंतरघाडीजायउक्तदो०की  
ठाकीजेवाहिवहिजिनेबलघनाय  
स्तानकरावेवालकोकठपीडमिट  
जायउक्तचो०प्राधीमिरबललेवा  
गिरीपिसवारिउरउपरकरदे  
स्तसोजाएसादेवैहसाकहे  
धन्वंतरघाडिजालाजानेविना  
नप्रावेपासदेवहसविधजिले

जल



५  
दल दे जो सही जाय वर खे न क पोल  
बाड़ा मना दुग्ध बह न जो प्या वे व ह  
बाल क को तो ट दि लावे पे ट चले सु व  
मिचल जाय धं मे ना हि कै से हि दु या  
वैद्य धन्वंतर से कहै रोग प्र फार  
मा को दहे मा त ज ह मे दू धी न र न  
जो दे य प ह लि छु टि ले ने हि प्रंतर  
न र न जो ले य स र वा द य ह रं ज ह हे  
रं ज क छु ना ह वैद्य धन्वंतर न्यु क  
३ हि ता को रोग का य तिस का उपाय दे  
जि ता त्वे त जे ग्रान के म ह दि ज ल मे  
मे य सा ठी वा व ल ग्रान के उस वा  
ल क को दे य भू च लु स क रोग ल द  
रु छे सा व न म दो मा स जो हो र का  
ति के काल क व जे हे वे स के र ह क  
क व छि हे वे लाल व ल क बि कि स



वै विना छीक मम धृति देव प्रपन्न न  
मिलि क्षण ॥ जन्म न शि सुभा रि दहे न  
छे सुकृत जाय विष्णु रिज वे हु गु द  
र क म बाध तिसै ति न प्रि जानि देव  
गुड न करे विचार ॥ तिसका उपाय  
सा ॥ विचार ल म ह दिते वै ला लाल  
वाल क को देवे दो सी पी वाल क को  
देवे दिन वा लिल ग दियो वना वे  
जम हो वं जव करे उपाय जाय से  
ग वाल क वं च जम गत दुध नहि  
पो ॥ जे वै ल र गामे जन लखे चल म  
के संग राइ ये दी नि प च्य वता य  
उन ॥ उपाय ॥ चौ ॥ कथे नारी को व  
कल ले म गवाय नीर पाय का डा  
वन वाय प्रात काल जो पी वें ना र वा  
ल क लखी निना वा टार ॥ अथ वा  
दर जे लखे सा चौ ॥ श्री र ग र



